UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना– उत्तराखण्ड़ राज्य के विकासखण्ड़ मोरी (जनपद उत्तरकाशी) के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन

[1]प्रवीणसिंह राणा शोध छात्र, भूगोल विभाग, डी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज, देहरादून
[2]डॉ० कमलसिंह बिष्ट असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज, देहरादून

सारांश

व्यवसायिक संरचना के अन्तर्गत समाज में जनसंख्या को उनके आर्थिक क्रियाकलापों एवं कौशल विकास के आधार पर बांटा जाता है। जनसंख्या की विविध प्रकार के कार्यो में संलग्नता 'व्यवसायिक संरचना को व्यक्त करती है। विकसित तथा विकासशील देशों के जनसंख्या सम्बन्धों में अत्यधिक अन्तर दिखाई देता है विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में वहां की जनसंख्या का बड़ा भाग तृतीय व चतुर्थ क्रियाओं में संलग्न रहता है जबकि विकासशील देशों में अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न रहती है तथा व्यवसायिक संरचना में गैर कर्मियों का प्रतिशत अधिक रहता है। अध्ययन क्षेत्र द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलापों की तुलना में अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक क्रियाकलापों कृषि एवं पशुपालन में संलग्न है।

संकेत शब्दः व्यावसायिक संरचना, कार्यशील जनसंख्या।

प्रस्तावना

व्यवसाय समाज का महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलाप है जो किसी प्रदेश के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक एवं जनांकिकीय विशेषताओं को प्रभावित करता है। इससे प्रदेश की विशेषताओं का ज्ञान होता है कि वह कृषि प्रधान है या कि उद्योग प्रधान। किसी भी क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना वहां की आर्थिक स्वरूप का द्योतक है। यह कृषि , उद्योग, सेवा क्षेत्र, शोध एवं अनुसंधान विकास में जनसंख्या के जुड़ाव और इनमें जन प्रतिनिधित्व को दर्शाता है। व्यवसायिक संरचना क्षेत्र विशेष की आर्थिक स्थिति के साथ–साथ वहां की कार्यशील जनसंख्या तथा उस पर निर्भरता और रोजगार व बेरोजगारी की स्पष्ठ तसवीर प्रस्तुत करता है। एम0 यू0 देशमुख (2015) के अनुसार 'व्यवसायिक संरचना जनसंख्या सरंचना का एक प्रमुख घटक है जो कार्यशील व अकार्यशील जनसंख्या के मध्य अनुपात को दर्शाता है'। जनसंख्या का प्रतिरूप एवं व्यवसायिक संरचना समाज के सामाजिक–आर्थिक विकास का प्रमुख सूचक है इसी संदर्भ में अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या प्रतिरूप एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध विषय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं, जिनमें अरविंद कुमार (2018), एम० यू० देशमुख (2014), डॉ०, के० एस० सरवासे, विष्णु प्रसाद (2017) आदि के नाम प्रमुख हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन प्रमुख व्यवसाय है, जिनमें 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त करती है। अध्ययन क्षेत्र में व्यवसायिक संरचना के अंतर्गत विविध क्रियाकलापों में संलग्न 15 से 65 आयु वर्ग की जनसंख्या को सम्मलित किया गया है। भारतीय जनगणना में जनसंख्या को आर्थिक दृष्टिकोण से 3 भागों में बांटा जाता है। प्रथम – मुख्य काम करने वाले (Main worker), द्वितीय सीमांतिक काम करने वाले (Marginal worker) एवं काम न करने वाले (Non worker)। भारतीय जनगणना के अनुसार काम करने वाला श्रमिक वह व्यक्ति होता है जिसकी मुख्य क्रिया अपनी भौतिक अथवा मानसिक शक्ति का उपभोग कर

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

आर्थिक दृष्टि से उत्पादन कार्यो में योगदान करना है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार व्यवसायिक संरचना को मुख्यतः तीन भागों में बांटा गया है – दीर्घकालिक कर्मी, अल्पकालिक कर्मी और गैर कर्मी। दीर्घकालिक व अल्पकालिक कर्मियों को पुनः 4 भागों में बांटा गया है – काश्तकार, खेतिहर मजदूर, पारिवारिक उद्योग कर्मी और अन्य कर्मी। इस प्रकार व्यवसायिक संरचना को निम्न आरेख से समझ सकते हैं–

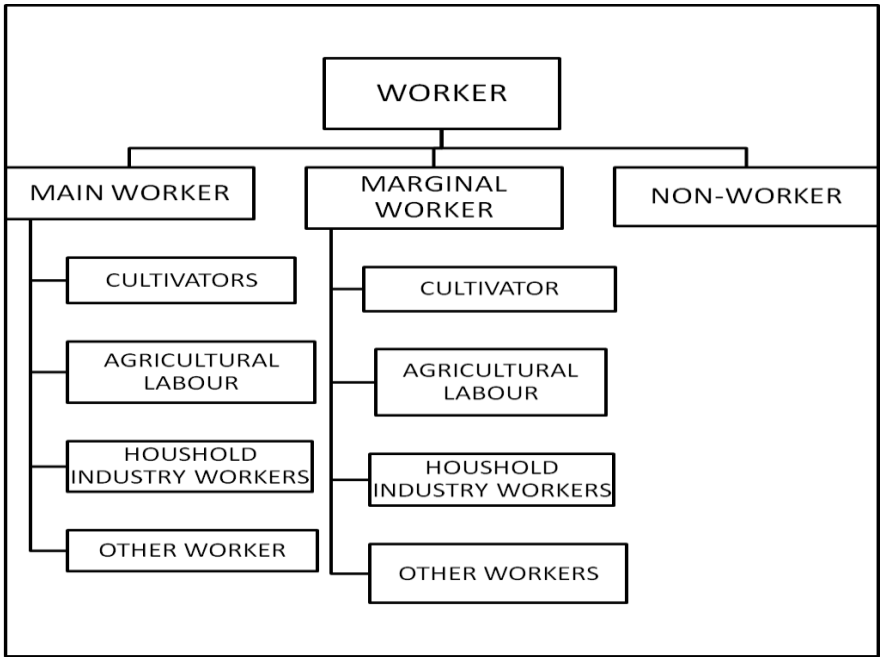

अध्ययन क्षेत्र

विकसखण्ड़ मोरी उत्तराखण्ड़ राज्य के उत्तरकाशी जनपद का सीमान्त विकासखण्ड़ है। इसकी स्थिति $30^0$56′53′′ उ० से $31^0$17′27′′ उत्तरी अक्षांश तथा $77^0$48′26′′ पू० से $78^0$36′50′′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसकी ऊँचाई 908 –6227 मीटर के मध्य है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 182.44 वर्ग किमी0 है। विकासखण्ड़ मोरी जिला मुख्यालय उत्तरकाशी से 97 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। विकासखण्ड़ मोरी के उत्तर–पश्चिम में हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में देहरादून, पूरब में भटवारी विकासखण्ड़ और दक्षिण में पुरोला व नौगांव हैं। मोरी, बरकोट, यमुनोत्री, हर की दून, हाटकोटी, यहां के प्रमुख निकटवर्ती पर्यटन स्थल हैं। वर्ष 2011 में यहां की कुल जनसंख्या 39691 है जो कि जनपद की कुल जनसंख्या का12.98 प्रतिशत है। यहां की कुल साक्षरता 63.49 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 76.40 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 49.87 प्रतिशत है। यहां का लिंगानुपात 946 है जो कि जनपद के लिंगानुप

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

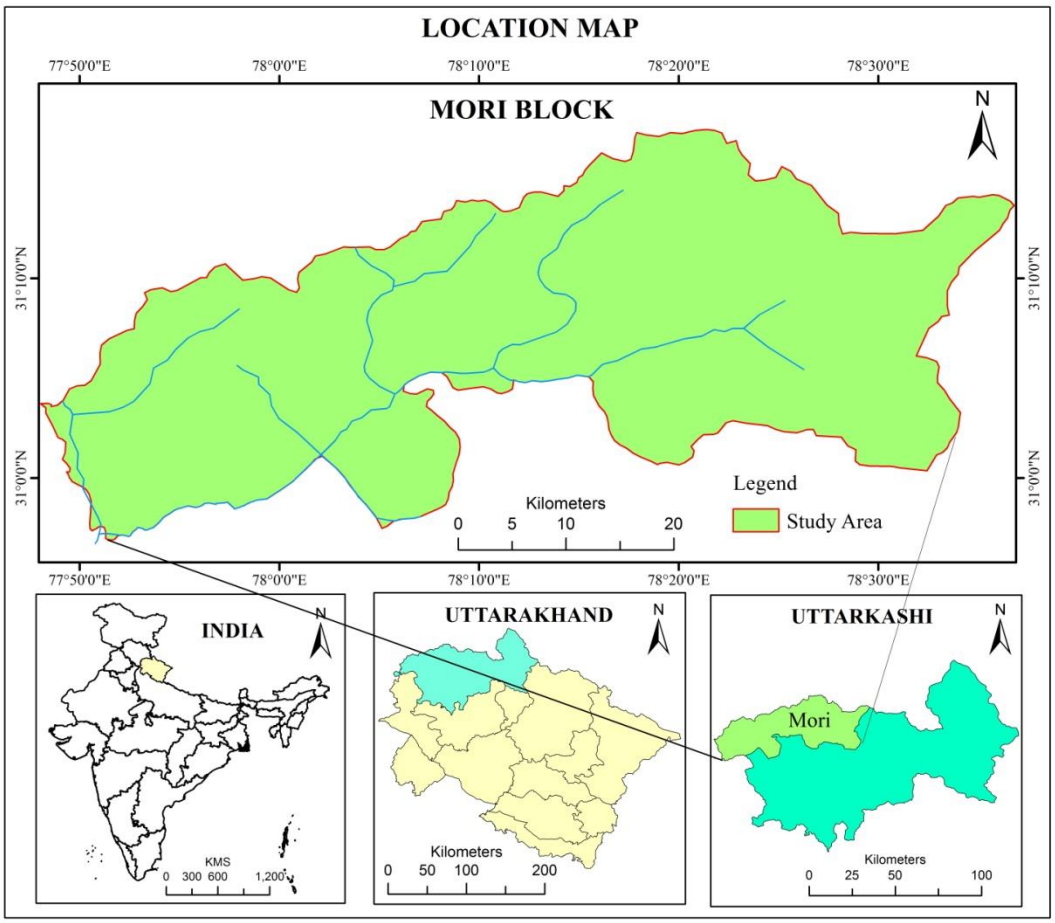

विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उत्तराखण्ड़ राज्य के जनपद उत्तरकाशी में जनसंख्या एवं व्यवसायिक संरचना के प्रतिरूप के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीय आंकडों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के लिए अध्ययन क्षेत्र को सर्वप्रथम ऊँचाई के आधार पर चार भागों 1500 मीटर से कम, 1500 से 2000 मीटर, 2000 से 2500 मीटर तथा 2500 मीटर से अधिक में बांटा गया है और प्रत्येक भाग से यादृच्छिक रूप से एक गाँव का चयन किया गया है। इस प्रकार क्रमशः आराकोट, नानई, पुज्येली तथा भिताड़ी गाँवों का चयन किया गया है। जहाँ से प्रश्नावली, अनुसूची, व्यक्तिगत साक्षात्कार तथा नमूना सर्वेक्षण के आधार पर प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किये गये हैं। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन भारतीय जनगणना पुस्तिका, जिला सांख्यिकीय पत्रिका तथा अन्य पुस्तकों एव पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से किया गया है। अध्ययन को रूचिकर एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए विभिन्न तालिकाओं, आलेखों, आरेखों तथा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

विकासखण्ड़ मोरी में व्यवसायिक संरचना

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

जीविकोपार्जन के लिए की जाने वाली उत्पादक आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं। जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना उसकी आर्थिक विशेषताओं को स्पष्ठ करती है। इससे किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान होता है। व्यवसायिक संरचना के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के विविध क्रियाकलापों में संलग्न जनसंख्या जिसकी आयु 15 वर्ष से अधिक तथा 65 वर्ष से कम है को सम्मलित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–1

विकासखण्ड़ मोरी में व्यवसायिक संरचना, वर्ष 2011

क्र० सं०	श्रमिक संरचना	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत
1	कृषक	16206	86.54
2	कृषि श्रमिक	821	4.38
3	पारिवारिक श्रमिक	148	0.79
4	अन्य श्रमिक	1552	8.29
5	कुल कर्मकार	18727	89.37
6	सीमान्त कर्मकार	2228	10.63
कुल मुख्य कर्मकार		20955	100.00

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद उत्तरकाशी वर्ष 2017

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहां पर वर्ष 2011 के अनुसार कृषक 86.54 प्रतिशत कृषि श्रमिक 4.38 प्रतिशत, पारिवारिक श्रमिक 0.79 प्रतिशत, अन्य श्रमिक 8.29 प्रतिशत हैं। इनमें कुल कर्मकार 89.37 प्रतिशत तथा सीमान्त कर्मकार 10.63 प्रतिशत हैं। अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड़ मोरी में मुख्य फसल धान, गेंहूँ, उड़द, राजमा, आलू हैं तथा बागवानी फसलों में सेब, पूलम, आड़ू आदि प्रमुख हैं। अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के कारण यहां पर बागवानी कृषि की अधिक संभावनाऐं हैं जिस कारण वर्तमान में यहां पर पारंपरिक कृषि के स्थान पर बागवानी कृषि पर अधिक ध्यान दिया जा रहा हैं और धीरे धीरे आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

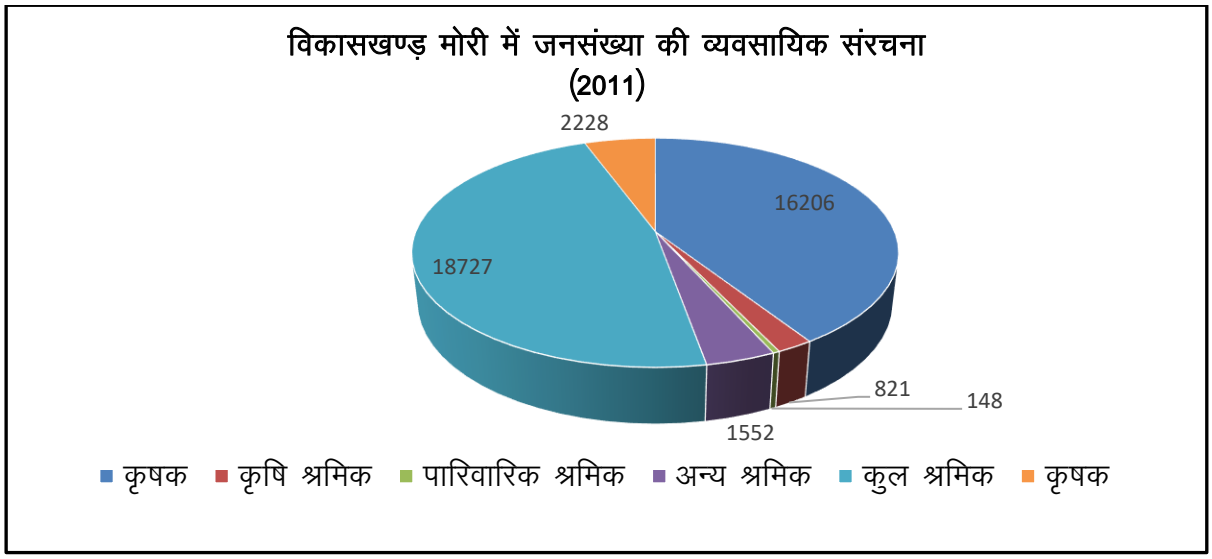

ग्राफ सं०–1

अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड़ मोरी में प्राथमिक सर्वेक्षण के लिए चार गाँवों आराकोट, नानई, पुज्येली और फिताड़ी का चयन किया गया है, इनकी जननांकिकीय संरचना को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–2

चयनित गाँवों में जननांकिकीय संरचना

क्र० सं०	गाँव का नाम	कुल परिवार	जनसंख्या			अनु० जाति	अनु० जनजाति	उत्तरदाताओं की संख्या
			जनसंख्या	पुरुष	महिला			
	आराकोट	188	748	417	331	274	14	232
	नानई	286	1385	722	663	331	11	344
	पुज्येली	61	357	185	172	90	00	76
	फिताड़ी	134	890	444	446	236	00	167
योग		669	3380	1768	1612	931	00	819

स्रोत– शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षित गणना पर आधारित, जनगणना हस्त पुस्तिका जनपद उत्तरकाशी वर्ष 2011।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ठ है कि चयनित गाँवों में कुल 669 परिवार हैं तथा कुल जनसंख्या 3380 है, जिनमें 1768 पुरूष तथा 1612 महिलाऐं हैं। अनुसूचित जाति एवं जनजाति की संख्या क्रमशः 931 एवं 26 है। चयनित गाँव आराकोट से 232, नानई से 344, पुज्येली से 76 तथा फिताड़ी से 167 व्यक्तियों से आंकड़े एकत्रित किये गये हैं।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

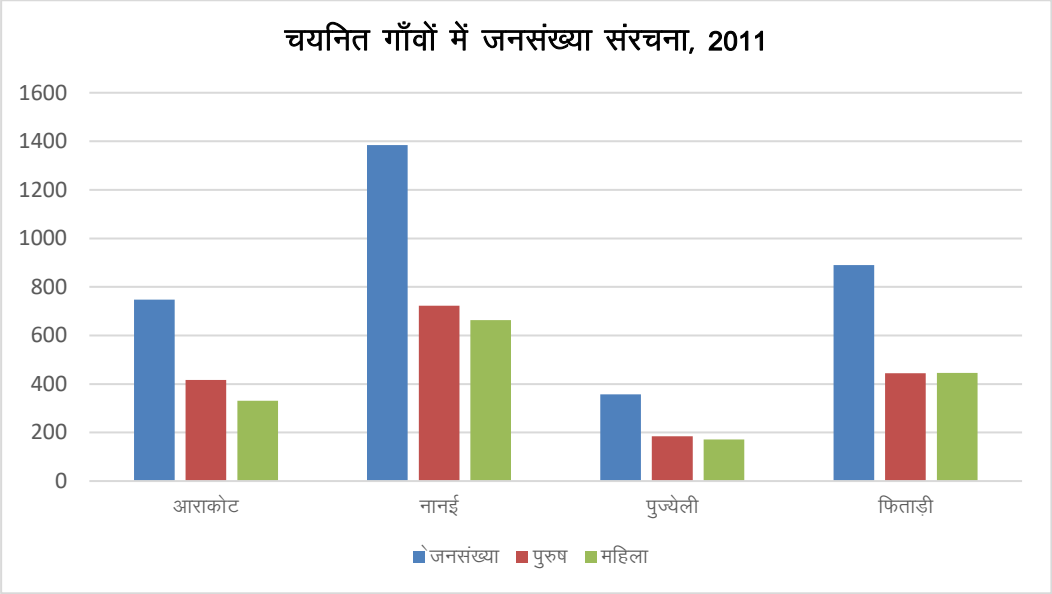

ग्राफ सं०–2

सारणी 2

चयनित गाँव में व्यवसायिक संरचना, (प्रतिशत में), (वर्ष 2017)

क्र० सं०	गाँव का नाम	प्राथमिक श्रेणी	द्वितीयक श्रेणी	तृतीयक श्रेणी
1	आराकोट	50	5.26	44.73
2	नानई	44.12	20.58	35.29
3	पुज्येली	65.20	8.70	26.08
4	फिताड़ी	73.34	10	16.67
कुल योग		58.17	11.13	30.70

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ठ है कि 58.17 प्रतिशत जनसंख्या प्राथमिक क्रियाकलाप, 11.13 प्रतिशत द्वितीयक क्रियाकलाप, 30.70 प्रतिशत तृतीयक क्रियाकलापों में संलग्न है। जैसे जैसे समुद्रतल से ऊँचाई बढ़ रही है वैसे वैसे प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भरता भी बढ़ रही है। आराकोट में 50 प्रतिशत तथा फिताड़ी में 73.34 प्रतिशत जनसंख्या प्राथमिक क्षेत्र में संलग्न है। यही क्रम द्वितीयक क्रियाकलापों में भी देखने को मिल रहा है। जबकि तृतीयक क्रियाकलापों में ऊँचाई के साथ जनसंख्या की कम संलग्नता देखने को मिल रही है, आराकोट में सर्वाधिक 44.73 प्रतिशत जनसंख्या तृतीय क्रियाकलापों में संलग्न है जबकि फिताड़ी में केवल 16.67 प्रतिशत जनसंख्या तृतीय क्रियाकलापों में संलग्न है।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

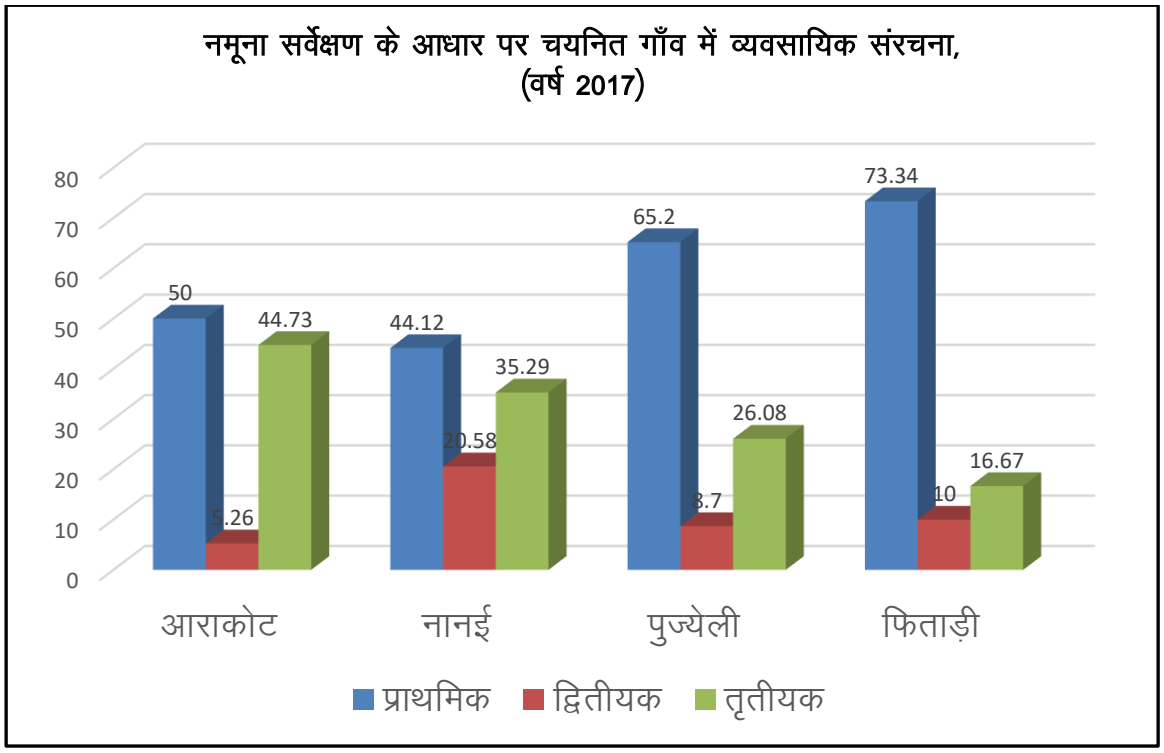

ग्राफ सं०–3

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड़ मोरी में सर्वाधिक जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। 86.54 प्रतिशत जनसंख्या कृषक है। वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र में परंपरागत कृषि की अपेक्षा लोग बागवानी या नगदी कृषि की ओर स्थानांतरित हो रहे हैं तथा यहां की प्रमुख फसलें आलू, राजमा, उड़द, सेब, अमरूद, पूलम तथा अखरोट हैं। अध्ययन क्षेत्र में आज से 15 साल पहले प्रमुख फसलें गेंहूँ, लाल धान, सरसों, तिल, मंडुआ, झंगोरा, आलू तथा राजमा थी। प्रमुख पशुओं में गाय, बैल, भैंस, भेड़ तथा बकरी थे तथा पत्येक परिवार लगभग 12 से 15 गाय, 3 से 4 भैंस और 150 से 200 भेड़ बकरियां पालते थे। परंतु वर्तमान में अधिकतर परिवार केवल 1 या 2 गाय तथा 1 बैल को पाल रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र में केवल आराकोट को छोड़कर तीनों गाँवों में पिछले 10 सालों से सेब का उत्पादन हो रहा है। जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है और धीरे–धीरे पलायन की गति कम हो रही है। अध्ययन क्षेत्र में 90 प्रतिशत पलायन केवल उच्चशिक्षा के लिए हुआ है। केवल 10 प्रतिशत पलायन रोजगार के लिए है।

अतः निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड़ मोरी की जलवायु सेब उत्पादन के लिए अच्छी है जिस कारण यहां के लोग धीरे– धीरे सेब व अन्य फसलों का उत्पादन बड़े स्तर पर कर रहें हैं। और यही कारण है कि जनसंख्या का 58.17 प्रतिशत भाग प्राथमिक क्रियाकलापों में संलग्न है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Bisht, K.S., Gupta, K.L., Nath, R. (2017). OCCUPATIONAL STRUCTURE OF RURAL POPULATION IN DISTRICT JAUNPUR: A BLOCK-WISE STUDY. Monthly Multidisciplinary Research Journal,7(3), 1-9.

Census of India (2001-11): "Uttarakhand, Primary Census Abstract, Uttarkashi Distrit", Office of Registrar General, Government of India, New Delhi.

Arvind Kumar, S. M. (2018). Trends of Occupational Pattern in India: An analysis NSSO. International Journal of Research in Social Sciences , 8 (1), 463-476. M. U. Deshmukh, P. A. (2015).

STUDY OF OCCUPATIONAL STRUCTURE IN NANDED CITY. Scholary Research Journal for Humanity Science & Language , 2/10, 2620-2626.

Surwase, K.S. ,(2116) : "A Geographical Analysis of Occupational Structure in Phaltan Tahsil of Satara District" (MS), AIJRHASS 16-217; Pp. 41

Banu, N.Sayira, (201), Changing Occupational structure and Economic Condition of Farm labourers in India: A Study,June 2014, pg.11.

Ghosh, B. N. , (1985), Fundamentals of Population Geography, Delhi pp.21. Kumar, j., (2013). Analysis of Sex-Ratio in Uttarakhand State from 1901-2011 : a Study. INDIAN JOURNAL OF RESEARCH, 3, 4950.

चान्दना, आर.सी., (2007), जनसंख्या भूगोल, नई दिल्ली कल्याणी पब्लिकेशर्स।

कुमार, प्रशान्त एवं उषा सिंह. (2016). मुंगेर जिला में विकासखंड़वार ग्रामीण व्यवसाय संरचना के बदलते स्वरूप का अध्ययन राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, 1, 33–50।

सिंह,विक्रम प्रताप एवं सिंह, अरविन्द कुमार. (2017). मिर्जापुर जनपद में व्यवसायिक संरचना का स्थानिक प्रतिरूप. राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, 1, 51–62।

नेगी, गजराज एवं विजय बहुगुणा. (2019). साक्षरता का स्थानिक वितरण प्रतिरूप– उत्तराखण्ड़ राज्य के गैरसैंण विकासखण्ड (जनपद चमोली) के सन्दर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन. श्रृखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, 6(9), 54–59।